राष्ट्रीय प्रतीक

जन–गण–मन

जन-गण-मन अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि तरंग

Jana-gana-mana

NATIONAL SYMBOLS

Digitized by the Internet Archive
in 2018 with funding from
Public.Resource.Org

https://archive.org/details/janaganamananati00unse

राष्ट्र गान

NATIONAL ANTHEM

प्रस्तावना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में इसके राष्ट्रीय प्रतीकों – राष्ट्र चिह्न, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान, राष्ट्र गीत, कैलेण्डर, राष्ट्रीय पशु, पक्षी तथा पुष्प पर आठ लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं। ये पुस्तिकाएं भारत के प्राचीन दर्शन व संस्कृति में वर्णित सौंदर्य तथा संवेदना को प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक एक पहचान प्रदान करते हैं और प्रतीकों का चयन प्रायः राष्ट्र विशेष के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। भारत के राष्ट्रीय प्रतीक आध्यात्मिक तथा भावनात्मक कल्याण व प्रकृति के साथ सामंजस्य हेतु मानवीय उत्कंठा की अभिव्यक्तियां हैं तथा युगों से उसकी कलात्मक सर्जनात्मकता के सूचक हैं।

इन पुस्तिकाओं में स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीकों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान तथा राष्ट्र गीत हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गाथा सुनाते हैं, जिसमें महान साहित्यकार, संगीतकार, समाज सुधारक तथा विचारक भारत को उपनिवेशवादी शासन से स्वतंत्र करने के लिए, मानव जाति के इतिहास में अनूठे ढंग से एक जुट हो गए थे। या, उदाहरणतः बाघ, मोर अथवा कमल पर राष्ट्रीय प्रतीकों की पुस्तकों में हम देख सकते हैं कि किस प्रकार प्रकृति–वनस्पति तथा प्राणिजगत ने चाक्षुष कलाकार, कवि, संगीतकार अथवा नर्तक की रचनात्मक प्रतिभा को प्रेरित किया है। रूढ़ शैली के अनुसार, कमल के अंकन का चरमोत्कर्ष दिल्ली स्थित बहाई मंदिर की वास्तुकला में तथा मुगलकालीन लघुचित्र की समृद्ध धरोहर को सन् 1610 ईसवी में बनाई गई मोर की चित्रकृति में भी देखा जा सकता है। कैलेण्डर सम्बंधी पुस्तिका समय मापने के प्राचीन ज्ञान के इतिहास को बतलाती है, जिसने हमें वर्तमान में प्रयोग में आने वाले विभिन्न कैलेण्डरों को दिया है तथा सम्राट अशोक के दर्शन और उनके समय की कलात्मक अभिव्यक्तियों की महान परंपरा ने भारत को उसका राष्ट्र चिह्न प्रदान किया है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र ने इस प्रकाशन को यथासंभव शिक्षाप्रद बनाने के लिए सरकारी संस्थाओं तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से उपलब्ध दस्तावेजों में प्रदत्त जानकारी का उपयोग किया है। इस पकाशन के निर्माण में अनेकानेक लोगों ने सहायता की है और केन्द्र उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र अपना यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के अज्ञात व अवर्णित सैनिकों तथा युवा पीढ़ी को भी समर्पित करता है, जो भविष्य की आशा है, और हमारे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कलाकारों, स्वतंत्रता सेनानियों की सांस्कृतिक परंपराओं, आदर्शों और मूल्यों को आगामी सहस्राब्द में ले जाने वाली है। इस प्रकाशन द्वारा एक भारतीय होने के तथ्य को स्वीकार करने में राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है और आशा की जाती है कि युवा पीढ़ी को, अन्य राष्ट्रों के बीच भारत को एक अग्रणी नेता के रूप में आगे ले जाने के लिए प्रेरित करेगा, जहां मानव तथा प्रकृति के लिए सहनशीलता, प्रेम व आदर तथा संस्कृतियों की विविधता द्वारा सत्य, सौन्दर्य व सद्भावना के विश्व व्यापक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकेगी। प्रत्येक पुस्तिका में पाठक के ज्ञान क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कुछ रचनात्मक गातिविधियां भी दी गई हैं।

सुरेन्द्र कौल
महानिदेशक

Foreword

For the celebration of the 50th year of India's independence, the Centre for Cultural Resources and Training has produced eight small booklets on the National Symbols of India- the Emblem, Flag, Anthem, Song, Calendar, Animal, Bird and Flower. These bring out the beauty and sensitivity represented in India's ancient philosophy and culture.

National Symbols provide an identity and the choice of symbols often reflect the values of a particular nation. The National Symbols of India are the manifestations of Man's yearning for spiritual and emotional well being, harmony with nature and are the expressions of his artistic creativity through the ages.

An attempt has been made in these booklets to give a brief historical background of the National Symbols of free India. For example, the National Flag, Anthem and Song tell us the story of India's Freedom Movement, where great literateurs, musicians, social reformers and thinkers came together to free India from the colonial rule in a manner unique to the history of mankind. Or, for instance, in the booklets of the National Symbols on the Tiger, Peacock or Lotus, one can see how nature - the flora and fauna have inspired the creative genius of the visual artist, poet, musician or dancer. The culmination of the stylised representation of the Lotus can be seen in the architecture of the Bahai temple in Delhi and the rich heritage of the Mughal miniature painting of the Peacock of circa 1610 C.E. The booklet on the Calendar traces the history of the ancient knowledge of calculating time which has resulted in a variety of calendars in use today and Ashoka's philosophy and the great tradition of artistic expressions of his times have given India its National Emblem.

The CCRT has used information provided in the records available with government agencies and other authentic sources to make this publication as informative as possible. Numerous people have helped in the production of the publication and the Centre would like to express gratitude to all of them.

The CCRT dedicates this publication to the unknown and unsung soldiers of the Freedom Movement and also to the young generation who are, the hope of the future and will carry forward the cultural traditions, ideals and values of our great scientists, philosophers, artists, freedom fighters into the next millennium. This publication endeavours in creating self-esteem and national pride in acknowledging the fact of being an Indian and hopes to inspire the youth to take India forward as a leader among nations ; where tolerance, love, respect for man and nature and the diversity of cultures will instil universal values of truth, beauty and goodness. Each booklet provides suggested activities to enlarge the scope of knowledge of the reader.

Surendra Kaul
Director General

जन–गण–मन

यह एक निर्विवाद सत्य है कि हर गीत राष्ट्र गान का दर्जा प्राप्त नहीं कर सकता, भले ही साहित्यिक दृष्टि से वह कितना भी उत्तम क्यों न हो। अध्ययन करने पर यह पता लगाया जा सकता है कि कुछ ही ऐसे राष्ट्र गान हैं, जिनका चुनाव केवल साहित्यिक योग्यता के आधार पर हुआ है। ऐसे कौन से तत्त्व हैं, जो एक राष्ट्र गान को, देशभक्तिपूर्ण काव्य की तुलना में विशिष्टता प्रदान करते हैं? विशेषज्ञों द्वारा राष्ट्र गान हेतु सुनिश्चित अन्य महत्त्वपूर्ण लक्षणों के अलावा, राष्ट्र गान को जन समुदाय द्वारा समूह में गाने योग्य तथा उसे विशेष रूप से राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त होना शामिल है।

हमें गर्व है कि हमारा राष्ट्र स्वतंत्र है, क्योंकि ऐसे भी देश हैं, जो आज भी अन्य देशों के शासनाधीन हैं और सिद्धान्ततः वे, शासक देश के ही राष्ट्र गान का प्रयोग कर रहे हैं।

भारत के राष्ट्र का पद प्राप्त करने हेतु पवित्र इतिहास लिए दो प्रमुख राष्ट्रगीतों में परस्पर प्रतिस्पर्धा रही। ये गीत थे–बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा लिखित 'वन्दे मातरम्' तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित 'जन–गण –मन'। ये दोनों ही गीत भारत के महान कवियों द्वारा लिखे गए हैं और देश से जुड़ी भावनात्मक स्मृतियों को उत्पन्न करते हैं।

महात्मा गांधी ने 'जन–गण–मन' को एक गीत ही नहीं, वरन् एक भक्तिपूर्ण भजन के रूप में वर्णित किया है। यह गीत, 27 दिसम्बर, 1911 को पहली बार सार्वजनिक तौर पर एक राजनैतिक समारोह में, कांग्रेस अधिवेशन के दूसरे दिन गाया गया था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के संपादन में प्रकाशित तत्त्वबोधिनी पत्रिका के

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

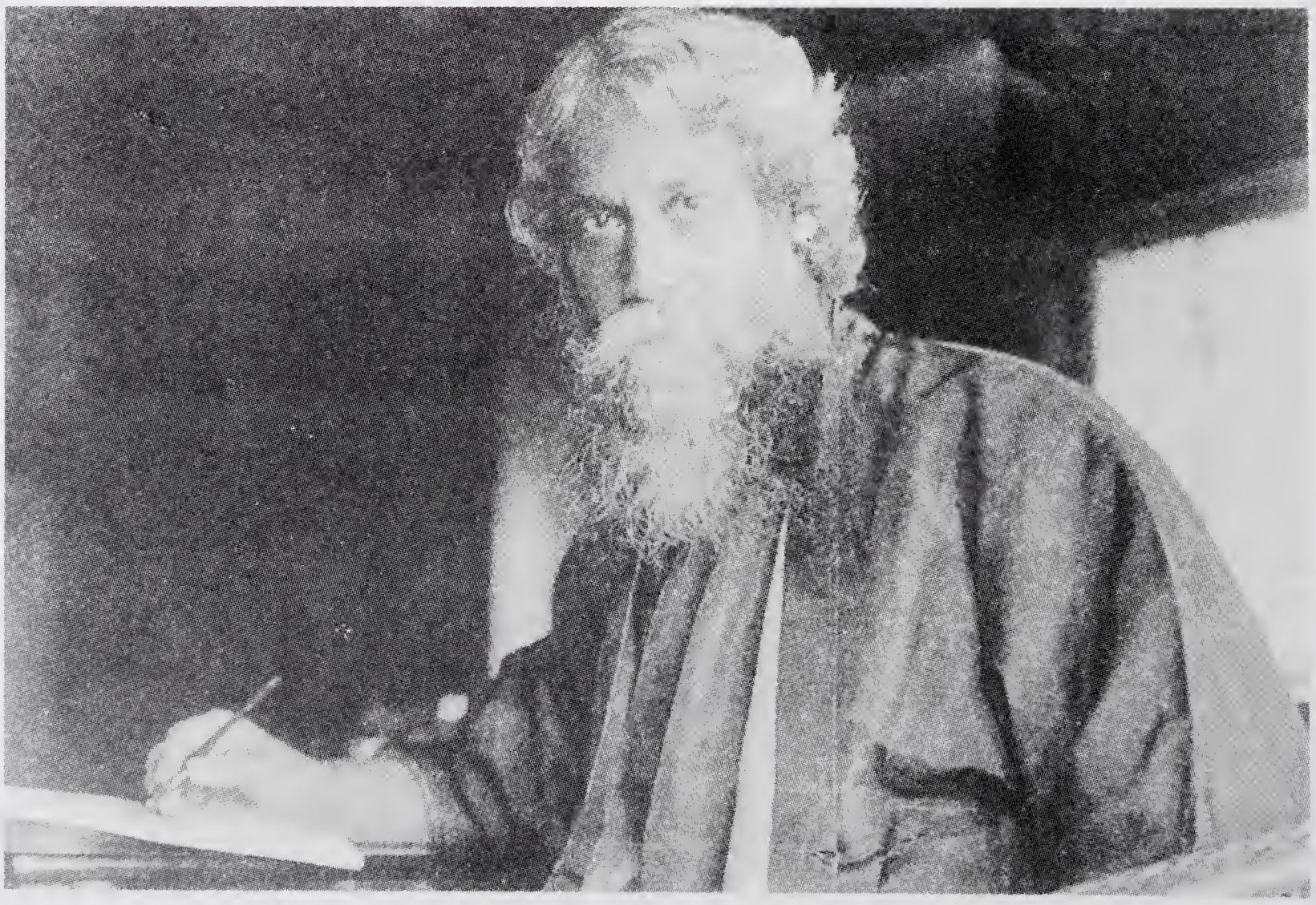

JANA-GANA-MANA

Every song cannot be a National Anthem, whatever be its literary qualities. While conducting a study, one may find that there are very few National Anthems which have been chosen solely on the basis of literary merit. What are the factors which distinguish a National Anthem from any patriotic verse? According to experts, among other things it can be sung in chorus to evoke a feeling of patriotism in a large group of people.

Our nation is proud to be independent, as there are countries which are still dependent territories of other nations and principally use the National Anthem of the ruling country.

Two of the Indian National Songs having a hallowed history vied with each other for the status of the National Anthem. These are *Vande Mataram* by Bakim Chandra Chatterjee and *Jana-gana-mana* by Rabindranath Tagore. Each of the songs are works of India's greatest writers and evoke nostalgic memories.

Mahatma Gandhi described *Jana-gana-mana*, not only as a song but as a devotional hymn. The song was first sung at a political occasion on December 27, 1911 on the second day of the Congress session. *Bharat Vidhata* was the title under which the song was first published in 1912 in *Tattvabodhini Patrika* of which Rabindranath Tagore was the editor. He himself translated the song into English under the title *"The Morning Song of India"*. The first appearance of the poet's translation was made in the Madanapalle College magazine of Madras.

"Tagore's song 'Jaya he' has become our National Anthem", recorded Subhash Chandra Bose's 'Azad Hind Fauj.' They rendered the song into Hindustani and adopted the new version as the National Anthem of the Azad Hind Fauj.

On January 24, 1950, which was the last day of the twelfth and last session of the Constituent Assembly, the President of the Assembly, Dr. Rajendra Prasad, adopted *Jana-gana-mana* as the National Anthem of the Republic of India. White referring to the question of National Anthem he said that instead of bringing the matter before the House and taking a decision by way of a resolution it would be better if he himself made a declaration in that regard. Dr. Rajendra Prasad issued a statement to this effect:

> ***"The compostion consisting of the words and music known as Jana-gana-mana shall be used for official purposes as the National Anthem of India, subject to such alterations in the words as the Government may authorise as occasion arises, and the song Vande Mataram, which has played a historic part in the struggle for India's freedom shall be honoured equally with the Jana-gana-mana and shall have equal status with it."***

The declaration was received with applause by the Assembly and *Jana-gana-mana* became the National Anthem of India and the song *Vande Mataram* was accorded equal status with it. The same day, all members standing the proceedings of the Assembly came to an end with singing of *Jana-gana-mana* and Vande Mataram. Then the Constituent Assembly adjoined

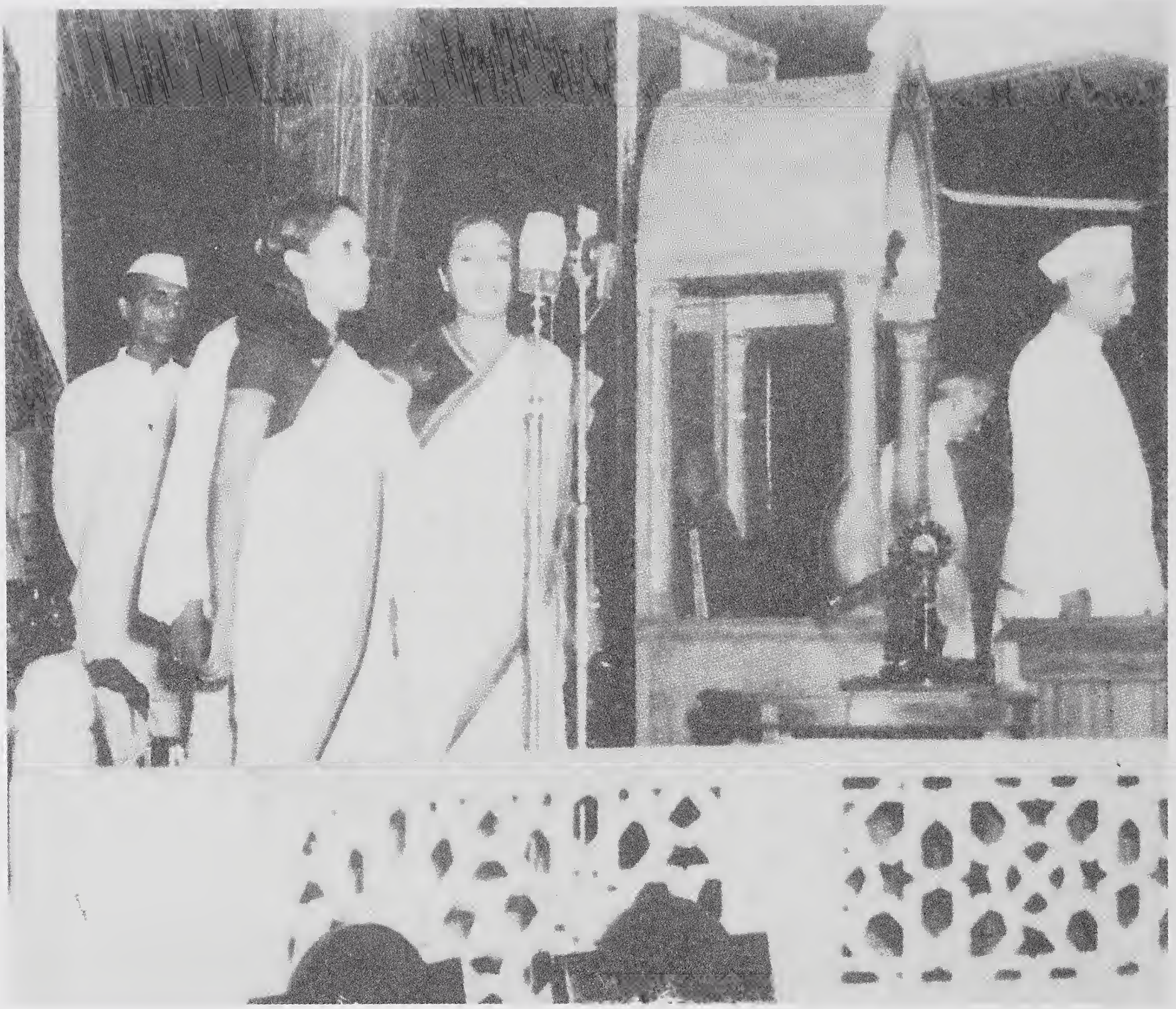

15 अगस्त 1947 को संपन्न संविधान सभा के स्वतंत्रता दिवस सत्र में राष्ट्र गान का गायन

सन् 1912 के अंक में 'भारत विधाता' शीर्षक से यह गीत पहली बार प्रकाशित हुआ था। स्वयं गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने "द मार्निंग सांग ऑफ इण्डिया" शीर्षक के अंतर्गत इस गीत को अंग्रेजी में अनूदित किया। कवि रवीन्द्रनाथ का यह अनुवाद मद्रास की मदनपाल्ले कॉलेज की पत्रिका में पहली बार प्रकाशित किया गया।

सुभाष चन्द्र बोस की आज़ाद हिन्द फौज ने इस गीत के बारे में घोषणा की कि "टैगोर का गीत" (जय हे) हमारा राष्ट्र गान बन गया है। इस गीत को उन्होंने हिन्दुस्तानी में प्रस्तुत किया और इसके नवीन रूपान्तर को आज़ाद हिन्द फौज के राष्ट्र गान के रूप में अपनाया गया।

संविधान सभा के बारहवें तथा अंतिम सत्र के अंतिम दिन 24 जनवरी, 1950 को सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 'जन–गण–मन' को भारत के गणतंत्र के राष्ट्र गान के रूप में स्वीकार किया। राष्ट्र गान के मुद्दे पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि इस मुद्दे को सदन में प्रस्तुत करने और प्रस्ताव स्वरूप

Sine die only to emerge as the (Provisional) Parliament of the Republic of India on January 26, 1950.

Certain national anthems have numerous verses, only one or two of which are customarily used. The poem of our National Anthem runs into five stanzas but only the first stanza has been adopted as the National Anthem.

JANA-GANA-MANA

Jana-gana-mana-adhinayak, jaya-he Bharata-bhagya-vidhata
Punjaba-Sindhu-Gujrata-Maratha-Dravida-Utkala-Banga
Vindhya-Himachala-Yamuna-Ganga
uchchhala-jaladhi-taranga
Tava subha name jage, tava subha asisa mage.
gahe tava jaya gatha.
Jana-gana-mangala-dayaka, jaya he Bharata-bhagya-vidhata
Jaya hē, jaya hē, jaya hē, jaya jaya jaya, jaya he.

Rabindranath Tagore in Shantiniketan, 1939

इस पर निर्णय लिए जाने के बजाय स्वयं इसके संबंध में उनका घोषणा करना अधिक उत्तम होगा। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपने इन्हीं विचारों का अनुपालन करते हुए राष्ट्र गान संबंधी एक बयान जारी किया :

"'जन–गण–मन' के रूप में शब्दों और संगीत से युक्त रचना को भारत के राष्ट्र गान के रूप में, सरकार द्वारा किए जाने वाले शाब्दिक परिवर्तनों के अनुसार, राजकीय समारोहादि में अवसरानुसार प्रयोग में लाया जाएगा तथा देश के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले गीत– 'वन्दे मातरम्' को 'जन–गण–मन' के समान की आदर तथा समान दर्जा प्रदान किया जाएगा।"

सभा में करतल ध्वनि से इस घोषणा का स्वागत किया गया और इस प्रकार 'जन–गण–मन' भारत का राष्ट्र गान बन गया तथा वन्दे मातरम् गीत को राष्ट्र गान के समान ही दर्जा प्रदान किया गया। उस दिन सभा की कार्यवाही जन–गण–मन तथा वन्दे मातरम् गीत के गायन के साथ ही समाप्त हुई, जिसमें सभी सदस्यों ने खड़े होकर भाग लिया। तत्पश्चात् संविधान सभा 26 जनवरी, 1950 को भारतीय गणतंत्र की (अंतरिम) संसद के सम्पन्न होने के कारण अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित कर दी गई।

कुछ राष्ट्रगानों में अनेक बन्द (स्टेन्ज़ा) होते हैं, इसलिए उनके एक या दो ही बन्दों का मुख्य प्रयोग किया जाता है। हमारे राष्ट्र गान में कुल पांच बन्द हैं, पर प्रथम बन्द को ही राष्ट्र गान के रूप में अभिगृहीत किया गया है।

जन–गण–मन

जनगणमन–अधिनायक जय हे भारत–भाग्यविधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधितरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण–मंगलदायक जय हे भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे,।।

पं. जवाहरलाल नेहरू ने गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि.... रवीन्द्रनाथ के साथ अपनी अंतिम भेंट के दौरान मैंने उनसे नए भारत के लिए एक राष्ट्र गान लिखने का अनुरोध किया था। उस समय तो मेरे ज़ेहन में हमारा वर्तमान राष्ट्र गान 'जन–गण–मन' नहीं था। कुछ ही समय बाद गुरूदेव स्वर्ग सिधार गए। अतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित गीत 'जन–गण–मन' को राष्ट्र गान के रूप में स्वीकार करना मेरे लिए एक अत्यन्त प्रसन्नता की बात थी।

While paying a tribute to Gurudev Rabindranath Tagore, Pandit Jawaharlal Nehru also recorded that ***".....During my last visit to Rabindranath Tagore, I requested him to compose a National Anthem for the new India. He partly agreed. At that time I did not have Jana-gana-mana, our present National Anthem in mind. He died soonafter. It was a great happiness to me when some years later after the coming of Independence, we adopted Jana-gana-mana as our National Anthem."***

He also made a statement in the Parliament on August 25, 1948.

....having a tune for the national anthem to be played by the orchestras and bands became an urgent question for us immediately after August 15, 1947..... It was obvious that "God save the King" was not suitable for our army bands after the changeover to independence. We were constantly being asked about the tune to be played and could not give an answer because the ultimate decision could be made only by the Constituent Assembly....

The matter came to a head on the occasion of the General Assembly of the United Nations in 1947 in New York. Our delegation was asked for our National Anthem to be played on a particular occasion. The delegation possessed a record of *Jana-gana-mana* and they gave this to the orchestra to practice. When they played it before a large gathering it was greatly appreciated and representatives of many nations asked for the musical score of this new tune which struck them as distinctive and dignified.

Translation of the Morning song of India written by Rabindranath Tagore from which our National Anthem was adopted

Thou art the ruler of the minds of all people, dispenser of India's destiny. They have roused thy heart of the Punjab, Sind, Gujarat, and Maratha, of the Dravid and Odisha and Bengal; it echoes in the hills of the Vindhyas and Himalayas, mingles in the music of the Jamuna and Ganges and is chanted by the waves of the Indian sea. They pray for thy blessings and sing thy praise. The saving of all people waits in thy hand, thee, dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

Day and night thy voice goes out from land to land calling the Hindus, Buddhists, Sikhs and Jains round thy throne and the Parsees, Musalmans and Christians. The East and the West join hands in their prayer to thee, and the garland of life is woven. Thou brings the hearts of all people into the harmony of one life, thou dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा 25 अगस्त, 1948 को संसद में प्रस्तुत बयान

..... 15 अगस्त, 1947 के पश्चात् वाद्यवृन्दों और बैन्ड द्वारा बजाए जाने के लिए राष्ट्र गान की धुन एक अति आवश्यक प्रश्न बन गई..... यह स्वाभाविक ही था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारी सेना के बैन्ड की टोलियों के लिए अंग्रेज सरकार की "गॉड सेव द किंग" उपयुक्त नहीं थी। हमसे सतत धुन के विषय में पूछा जाने पर भी हम उत्तर नहीं दे पा रहे थे, क्योंकि अंतिम निर्णय संविधान सभा द्वारा ही लिया जा सकता था.....

सन् 1947 में न्यूयॉर्क में संपन्न संयुक्त राष्ट्र की आम सभा के अवसर पर यही मुद्दा सम्मुख आया। एक विशिष्ट अवसर पर हमारे शिष्ट मंडल से हमारे राष्ट्र गान की धुन बजाने का अनुरोध किया गया। शिष्ट मंडल के पास 'जन–गण–मन' का एक रेकार्ड रखा था, जिसे उन्होंने वाद्य – वृन्द को अभ्यास करने हेतु दे दिया। एक बड़े जनसमूह के समक्ष वाद्यवृन्द द्वारा बजाए जाने पर धुन की अत्यन्त सराहना की गई और अनेक देशों के प्रतिनिधियों को यह धुन इतनी विशिष्ट और शानदार लगी कि उन्होंने इसकी स्वरलिपि भी माँगी।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित भारत के प्रभात गीत का अनुवाद, जिसमें से भारत का राष्ट्र गान लिया गया

तुम सबके मन के राजा हो! तुम भारत के भाग्य विधाता हो! तुम्हारी महिमा पंजाब, सिन्ध, गुजरात, महाराष्ट्र, द्रविड़, उड़ीसा, बंगाल, विंध्याचल और हिमालय की पर्वत शृंखलाओं तक व्याप्त है, तुम्हारा मधुर संगीत गंगा–यमुना नदियों में गूँज रहा है। सागर की लहरें तुम्हारा गुणगान करती हैं। ये लहरें तुम्हारा आशीर्वाद पाने की प्रार्थना करती है। सबका कल्याण तुम पर निर्भर है। तुम भारत के भाग्य विधाता हो।

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

दिन–रात तुम्हारी पुकार सभी स्थानों से हिन्दू, बौद्ध, सिक्ख, जैन, पारसी, मुसलमान तथा ईसाई को एकत्रित करने के लिए पहुँचती है। तुम्हारी आराधना करने के लिए पूर्व तथा पश्चिम दिशाएं एक होती हैं। तुम्हें अर्पित करने के लिए जीवन माला गूँथी जाती है। तुम सबके हृदय में जीवन की समस्वरता लाते हो। तुम भारत के भाग्य विधाता हो!

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

राष्ट्रों के उत्थान – पतन से अनभिज्ञ तीर्थयात्रियों का झुण्ड एक अंतहीन मार्ग से होकर गुज़रता है। तुम्हारे चक्र की बुलन्द ध्वनि से यह दल प्रतिध्वनित होता है। हे शाश्वत सारथी! नियति के बुरे दिनों से तुम्हारे तूर्यनाद की ध्वनि प्रतिध्वनित होती है। तुम मनुष्य मात्र को मृत्यु के पार लगाते हो! भवसागर के पार उतारते हो! तुम्हारे संकेत मात्र से मनुष्य के मार्ग स्पष्ट होते हैं! तुम भारत के भाग्य विधाता हो!

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

घना अंधेरा था और रात बहुत गहराई हुई थी। मेरे देश में मुर्च्छापूर्ण मृत्युसमान चुप्पी थी। पर हे मातृभूमि, देश के भयंकर परेशानी से भरे समय में भी तेरी ये बांहें उसके आसपास थीं। हे मातृभूमि! तुम्हारे नेत्रों ने

The procession of pilgrims passes over the endless road rugged with the rise and fall of nations; and it resounds with the thunder of thy wheel. 'Eternal charioteer'? Through the dire days of doom thy trumpet sounds and men are led by thee across death. Thy finger points the path to all people. Oh! dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

The darkness was dense and deep was the night. My country lay in a death like silence of swoon. But thy mother arms were round her and thine eyes gazed upon her troubled face in sleepless love through her hours of ghastly dreams. Thou art the companion and the saviour of the people in their sorrows. Oh! dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

The night falls; the light breaks over the peaks of the Eastern hills, the birds begin to sing and the morning breeze carries the breath of new life. The rays of thy mercy have touched the waking land with their blessings. Victory to the King of Kings, Victory to thee, dispenser of India's destiny.

Victory, Victory, Victory to thee

Rabindranath Tagore

Gurudev Rabindranath Tagore was born on May 7, 1861 in the ancestral mansion, Jorasanko, in Central Kolkata. His grandfather, Dwarkanath, who built the family fortune, was known as a "prince". His father Maharishi Debendranath Tagore broke away from orthodox

The House of the Tagores, Kolkata

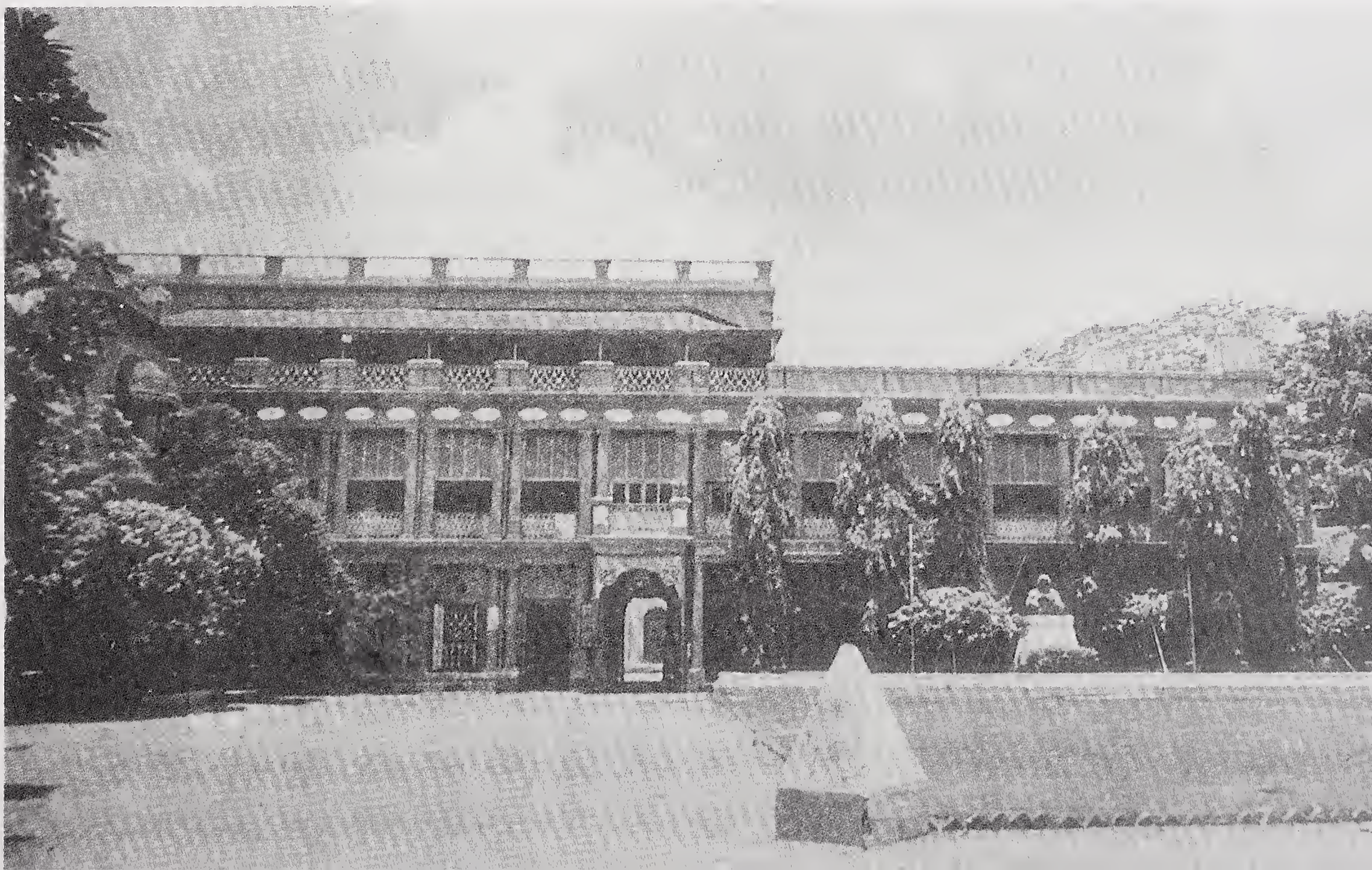

देश के परेशान मुख पर अपने स्नेह की निद्राहीन टकटकी लगाए रखी। तुम दुखी जनमानस की उद्धारक, उसकी सहभागी हो! तुम भारत के भाग्य के विधाता हो!

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

रात्रि के बाद प्रातःकाल पूर्व के पर्वत शिखरों पर सूर्य का प्रकाश फैल जाता है, पक्षी चहचहाने लगते हैं और प्रातःकालीन नवजीवन से परिपूर्ण उच्छ्वास लेकर पवन आता है! तुम्हारी करूणामयी किरणों ने अपने आशीर्वाद से जागी भूमि को छू लिया है। राजाओं के राजा की जय हो! तुम्हारी विजय हो! भारत के भाग्य विधाता की जय हो!

तुम्हारी विजय हो, विजय हो, विजय हो

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई, 1861 को कोलकाता शहर के एक प्रमुख भाग में उनके पैतृक निवास स्थान जोरासांको में हुआ था। उनके दादा द्वारकानाथ, परिवार के भाग्य निर्माता स्वरूप थे, जिन्हें "प्रिंस" के नाम से जाना जाता था। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर सभी परिवारिक रूढ़ परंपराओं को तोड़ एक ब्रह्मसमाजी नेता बन गए थे। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर की पंद्रह संतानों में से, चौदहवीं संतान थे – रवीन्द्रनाथ (1861–1941)। वे एक अत्यंत सांस्कृतिक पारिवारिक वातावरण में पलकर बड़े हुए। रवीन्द्रनाथ के अनेक भाई–बहन कला क्षेत्र से जुड़े हुए थे–एक भाई संगीत रचनाकार, एक अन्य अव्यवसायी तौर पर नाटककार और दूसरों ने अपने ज्येष्ठतम भाई द्वारा संपादित साहित्यिक पत्रिका में अपना योगदान दिया। वे स्वयं भी एक दार्शनिक थे। उनके पिता ने अपने सबसे छोटे पुत्र की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया और वे उन्हें अमृतसर एवं हिमालय की लंबी तीर्थयात्रा पर भी लेकर गए। रवीन्द्रनाथ का जीवन–दर्शन अपने पिता के धार्मिक विचारों से अत्यंत प्रभावित हुआ। रवीन्द्रनाथ को पढ़ाई हेतु स्कूल भेजा गया, पर उन्हें औपचारिक शिक्षा रास नहीं आई और यह देख तेरह वर्ष की आयु में ही उन्हें पढ़ाई छोड़ने की अनुमति दे दी गई। रवीन्द्रनाथ ने घर पर रहते हुए काव्य लेखन के प्रयोग आरंभ कर दिए और एक प्रकार से साहित्य तथा संगीत से परिपूर्ण शिक्षा ठाकुर परिवार में सतत चलती रही। रवीन्द्रनाथ अपने सबसे बड़े भाई से प्रोत्साहन पाकर बीस वर्ष की आयु में ही अपने प्रथम काव्य संग्रह के लिए प्रसिद्ध हो गए। जब रवीन्द्रनाथ को उनकी प्रथम साहित्यिक कृति हेतु सम्मानित किया गया, तब स्वंय बंकिमचन्द्र भी उपस्थित थे। सन् 1883 में रवीन्द्रनाथ का विवाह कर दिया गया। सन् 1901 में रवीन्द्रनाथ ने शांति निकेतन में एक स्कूल की स्थापना की, जहां उनके पिता ध्यानमग्न हो अपना जीवन व्यतीत करते थे। रवीन्द्रनाथ का आदर्श रट कर किताबी ज्ञान प्राप्त करना नहीं, वरन् मातृभाषा के माध्यम से सृजनात्मक शिक्षा ग्रहण करना था। इस अनुभूति का प्रत्यक्ष अनुभव रवीन्द्रनाथ को शांति निकेतन में हुआ, जहां कला के दोनों पहलुओं–रचनात्मक व निष्पादन की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

सन् 1912 में रवीन्द्रनाथ ने पत्नी व पांच में से तीन संतानों की मृत्यु के पश्चात् गीत रूप में श्रद्धांजलि स्वरूप अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीतांजलि' प्रकाशित की। सन् 1913 में मूलतः बंगला में लिखित व अंग्रेजी में अनूदित उपर्युक्त पुस्तक को साहित्य के नोबल पुरस्कार, जो किसी भी एशियावासी को प्रथम बार प्रदान

family traditions and became a leader of the Brahmo Samaj. The fourteenth of Maharishi Debendranath Tagore's fifteen children, Rabindranath Tagore grew to manhood in a highly cultured family environment. A number of his brothers and sisters were artistically inclined - one composed music, another staged amateur theatre and many contributed to the literary magazine edited by his eldest brother, who was also a philosopher. His father gave special attention to his youngest son's education and took him on an extended pilgrimage to Amritsar and the Himalayas. His father's religious views influenced him. He was sent to school but the formal education did not suit him and he was allowed to give up formal studies at the age of 13. Living at home, he began to experiment with writing verse and as such education continued in the Tagore household which was suffused with literature and music. Encouraged by his older siblings, he went on to win renown at the age of twenty with his first volume of Bengali poems. Bankim Chandra Chatterjee, himself was present when honour was bestowed on him for his first literary venture. Tagore was married in 1883 and in 1901 he founded a school at Shantiniketan, the retreat where his father used to pass his days in meditation. Not bookish learning by rote, but creative education through his mother tongue was Tagore's ideal which he sought to realize at Shantinketan where most of the creative and performing arts were taught.

After the death of his wife and three of his five children, he published in 1912 his famous work entitled *Gitanjali* (song offering). Rabindranath Tagore became an international figure when his *Gitanjali,* an anthology of lyrics, originally written in Bengal and translated into English by him, was awarded the Nobel prize for literature - the first ever to an Asian in 1913. Since then he came to be known not only as a great writer but also as spokesman of modern India.

In 1921, Tagore opened Viswa-Bharati University at Shantiniketan dedicating it to his ideal of world brotherhood and cultural interchange.

Tagore also wrote *"Sonar Bangla"* which became the national anthem of Bangladesh. *Jana-gana-mana* was written for the Congress Session in 1911 in Kolkata. Tagore and Gandhi met for the first time in Shantiniketan on March 6,1915. In April 1919 after the massacre of Jalianwala Bagh in Punjab, he renounced his knighthood in protest. He believed that universality can be attained not by suppressing the cultural autonomy of any constituent unit but by finding a place for all through an universal approach. He respected his own heritage and was at the same time a great admirer of the intellectual energy and scientific spirit of the west.

Described as a Renaissance figure, Rabindranath Tagore had a multi-faceted personality. Besides being a poet, he was a dramatist, writer of short stories, novelist, painter, innovator in education and rural reconstruction.

किया गया था, से सम्मानित किया गया और इस प्रकार पुरस्कृत होने पर रवीन्द्रनाथ एक अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त व्यक्ति बन गए। तब से, रवीन्द्रनाथ न केवल एक महान लेखक, वरन् आधुनिक भारत के प्रवक्ता के रूप में भी प्रसिद्ध हो गए।

सन् 1921 में श्री ठाकुर ने विश्व मातृत्व तथा सांस्कृतिक विनिमय के आदर्श को समर्पित करते हुए शांति निकेतन में विश्व भारती का शुभारंभ किया।

श्री ठाकुर ने "सोनार बांग्ला" कविता भी लिखी, जिसे कालांतर में बांग्ला देश के राष्ट्र गान का दर्जा दिया गया। सन् 1911 में कोलकाता में संपन्न होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के लिए रवीन्द्रनाथ ने जन–गण–मन शीर्षक गीत लिखा। 6 मार्च, 1915 को शांति निकेतन में श्री ठाकुर तथा गांधी जी पहली बार मिले थे। अप्रैल 1919 में, पंजाब में हुए जलियांवाला बाग़ हत्याकाण्ड के पश्चात् रवीन्द्रनाथ ने अपना विरोध प्रदर्शित करते हुए अपनी 'नाइटहुड' उपाधि लौटा दी। रवीन्द्रनाथ का विश्वास था कि किसी भी संवैधानिक समाज की सांस्कृतिक स्वायत्तता पर रोक लगा कर सर्वव्यापकता को हासिल नहीं किया जा सकता। बल्कि सबके लिए स्थान खोजकर ही एक सार्वभौमिक दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। रवीन्द्रनाथ अपनी धरोहर के प्रति गर्व का अनुभव करते थे और पाश्चात्य बौद्धिक प्रवृत्ति के प्रशंसक थे।

नवचेतना से परिपूर्ण रवीन्द्रनाथ एक बहुमुखी व्यक्तित्व के स्वामी थे। कवि होने के अलावा, वे एक नाटककार, लघुकथाकर, उपन्यासकार, चित्रकार व ग्रामीण तथा शैक्षिक पुनर्रचना के प्रवर्तक भी थे।

लगभग सत्तर वर्ष की आयु में श्री ठाकुर ने चित्रकारी करनी आरंभ की और दस वर्ष के भीतर लगभग तीन हज़ार चित्रकृतियां बनाई, जो कि संकल्पनात्मक स्तर पर निश्चित रूप से भारतीय थीं, पर साहित्यिक दृष्टिकोण से प्रचलित भारतीय मानदण्डों से सर्वथा परे थी। रवीन्द्रनाथ के रेखाचित्र तथा चित्रकृतियां मन के अचेतन व अर्धचेतन स्तरों की खोज करती हैं। रवीन्द्रनाथ ने सत्तरवें दशक में ही सौर प्रणाली की क्रियाविधि तथा सापेक्षता के सिद्धान्त का वर्णन करते हुए प्राथमिक विज्ञान पर एक पाठ्य पुस्तक भी लिखी।

चीन की एक पुरानी कहावत है :

एक हरा पौधा अपने हृदय में रोपो
चहचहाता पक्षी बाहर आएगा उसमें से

मानव मन में निहित इसी पवित्र भावना ने श्री ठाकुर को बाल साहित्य रचना की प्रेरणा दी, क्योंकि गाने के बिना, पक्षियों के बोलने पर वर्षा नहीं आएगी। वे एक जन्मजात कथाकर थे और उनकी वर्णनात्मक शैली से सभी छोटे–बड़े आकृष्ट होते थे। उन्होंने बच्चों के लिए विशेष तौर पर लिखा और उनका लिखा प्रत्येक शब्द सौन्दर्य से दमकता प्रतीत होता है। प्रो. हुमायूँ कबीर के अनुसार "शायद, भारत और आधुनिक विश्व को श्री ठाकुर की सबसे महान देन उनकी यह भावना है कि अपनी गहनतम भावनात्मक अन्तर्दृष्टि से ही मनुष्य एक हो सकता है। रवीन्द्रनाथ का व्यक्ति विशेष की प्रतिष्ठा में गहन विश्वास था और वे विश्व में व्याप्त सांस्कृतिक स्वायत्तता के शक्तिशाली समर्थकों में से एक थे।"

सन् 1941 में 81 वर्ष की आयु में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का देहांत हुआ।

Tagore took to painting when he was almost seventy and yet produced within ten years almost three thousand paintings which were inherently Indian in concept though executed in a style evolved by him. His drawings and paintings explore the unconscious and subconscious levels of the mind. In his seventies, he wrote a text book on elementary science which explained the theory of relativity and the working of the solar system.

One hears of an old Chinese saying :

Plant a green bough within your heart
and the singing bird will come

It is this interpretation within a man's mind that inspired Tagore to compose for children; for without the singing bird's prompting the rain will not come. Tagore was a born story-teller and young and old were deeply attracted to his narrative style. He wrote extensively for children and every word he ever wrote emanates beauty. According to another son of the soil Prof. Humayun Kabir, "perhaps Tagore's greatest contribution to India and the modern world is his recognition that man can unite only on the bars of their deepest spiritual insight. He was a great believer in the dignity of the individual and was one of the strongest champions of cultural autonomy that the modern world has known."

Gurudev Rabindranath Tagore died at the age of 81 in 1941.

जन–गण–मन

जनगणमन–अधिनायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधितरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण–मंगलदायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

अहरह तव आह्वान प्रचारित,
शुनि तव उदार वाणी
हिन्दु बौद्ध शिख जैन
पारसिक मुसलमान खिस्टानी
पूरव–पश्चिम आसे
तव सिंहासन–पाशे
प्रेमहार हय गांथा।
जनगण–ऐक्य–विधायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

पतन–अभ्युदय–बंधुर पन्था,
युगयुगधावित यात्री,
हे चिरसारथि, तव रथचक्रे
मुखरित पथ दिन रात्रि
दारूण–विप्लव–माझे
तव शंखध्वनि बाजे,
संकटदुःखत्राता।

जनगण–पथपरिचायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

घोर तिमिरघन निविड़ निशीथे
पीड़ित मूर्च्छित देशे
जाग्रत छिल तव अविचल मंगल
नतनयने अनिमेषे।
दुःस्वप्ने आतंके
रक्षा करिले अंके,
स्नेहमयी तुमि माता।
जनगण–दुःखत्रायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

रात्रि प्रभातिल, उदिल रविच्छवि
पूर्व–उदयगिरिभाले,
गाहे विहंगम, पुण्य समीरण
नवजीवन रस ढाले।
तव करूणारूण–रागे
निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा।
जय जय जय हे, जय राजेश्वर,
भारत–भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

JANA-GANA-MANA

Jana-gana-mana adhinayaka
jaya hē Bharata-bhagya-vidhata

Punjaba-Sindhu-Gujrata-Maratha-
Dravida-Utkala-Banga

Vindhya-Himachala-Yamuna-Ganga-
uchchhala-jaladhi-taranga

Tava subha namē jagē,
tava subha asisa magē
gahe tava jaya-gatha,

Jana-gana-mangala-dayaka jaye hē
Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

Aharaha tava ahvana pracharita,
suni tava udara vani

Hindu-Bauddha-Sikha-Jaina-
Parasika-Musalmana-Khristani

Pūrava-paschima asē,
tava simhasana-pasē
prema-hāra haya gantha,

Jana-gana-aikya-vidhayaka
jaya hē Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

Patana-abhyudaya-bandhura pantha,
yuga yuga dhavita yatri,

Hē chira-sarathi, tava ratha-chakrē
mukharita patha dina-ratri,

Daruna-viplava-majhē
tava sankhadhvani bajē,
sankata-duhkhatrata,

Jana-gana-patha-parichayaka
jaya hē Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

Ghora-timira-ghana-nivida-nisithē
pidita-mūrchhita dēsē

Jagrata chhila tava avichala
mangala nata-nayanē animēsē

Duhsvapnē atankē
raksa karilē ankē
snehamayi tumi mata,

Jana-gana-duhkhatrayaka
jaya hē Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

Ratri prabhatila, udila ravichchhavi
pūrva-udaya-giri-bhalē,

Gahe vihangama, punya samirana
nava-jivana-rasa dhalē.

Tava karunaruna-ragē
nidrita Bharata jagē
tava charane nata matha,

Jaya jaya jaya hē, jaya rajēsvara
Bharata-bhagya-vidhata

Jaya hē, jaya hē, jaya hē,
jaya jaya jaya jaya hē!

भारत के राष्ट्र गान संबंधी आदेश

कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित जन–गण–मन के रूप में प्रसिद्ध गीत का प्रथम पद – भारत का राष्ट्र गान है। राष्ट्र गान की निर्धारित वादन अवधि लगभग 52 सेकण्ड है। कुछेक अवसरों पर राष्ट्र गान की प्रथम व अंतिम पंक्तियों से युक्त राष्ट्र गान का एक संक्षिप्त रूपान्तर भी बजाया जाता है। इसकी निर्धारित वादन अवधि 20 सेकण्ड है।

निम्नलिखित अवसरों पर राष्ट्र गान का पूर्ण रूपान्तर बजाया जाएगाः

नागरिक तथा सैनिक प्रतिष्ठापन के अवसर पर;

राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल और उप–राज्यपाल को उनके संबंधित राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में समारोहिक अवसरों पर राष्ट्रीय सलामी दिए जाने के अवसर पर (अर्थात् राष्ट्रीय सलामी–सलामी शास्त्र समादेश, राष्ट्र गान के साथ);

परेडों के दौरान उल्लिखित किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों की उपस्थिति को महत्ता प्रदान न करते हुए;

सरकार द्वारा आयोजित जन समारोहों तथा औपचारिक राज्य समारोहों में माननीय राष्ट्रपति के आगमन तथा ऐसे ही समारोहों में माननीय राष्ट्रपति के प्रस्थान पर;

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से राष्ट्रपति द्वारा देश को संबोधित किए जाने के प्रसारण से ठीक पहले और बाद में;

राज्य/संघ शासित प्रदेश में औपचारिक राज्य समारोहों में राज्यपाल/उप–राज्यपाल के आगमन व प्रस्थान के अवसर पर;

परेड में राष्ट्र ध्वज की प्रस्तुति पर;

सैन्य दलीय ध्वजों के प्रस्तुतीकरण किए जाने पर;

नौसेना में ध्वज फहराते समय।

Orders relating to the National Anthem of India

The composition consisting of the words and music of the first stanza of the late poet Rabindranath Tagore's song known as 'Jana-gana-mana' is the National Anthem of India. Playing time of the full version of the Anthem is approximately 52 seconds.

A short version consisting of the first and last lines of the National Anthem is also played on certain occasions. Its playing time is about 20 seconds.

The full version of the Anthem shall be played on the following occasions :

Civil and Military Investitures ;

When National Salute is given on ceremonial occasions to the President or to the Governor and Lieutenant Governor within their respective States and Union Territories ;

During parades-Irrespective of whether any of the dignitaries referred above is present or not;

On arrival of the President at formal State functions and other functions organised by Government and mess functions and on his departure from such functions;

Immediately before and after the President addresses the Nation over the All India Radio and T.V. ;

On arrival of the Governor / Lieutenant Governor at formal State functions within his State/Union Territory and on his departure from such functions ;

When the National Flag is brought on parade ;

When the Regimental Colours are presented ;

For hoisting of colours in the Navy.

राष्ट्र गान की स्वर लिपि

Notation of National Anthem

सः पांचवां काला

S: Fifth Black

सरे	गग	गग	गग	ग	गग	रेग	म
जन	गण	मन	अधि	ना	यक	जय	हे
SR	GG	GG	GG	G	GG	RG	M
JA	GA	MA	ADHI	NA	YA	JA	HE
NA	NA	NA			KA	YA	

ग	गग	रे	रेरे	नीरे	स	–	स
भा	रत	भा	ग्यवि	धा–	ता	–	पं
G	GG	R	RR	NR	S	–	S
BHA	RA	BHA	GYA	DHA	TA	–	PUN
	TA		VI				

प	पप	–प	पप	प	पम	पम	प
जा	बसिं	–धु	गुज	रा	तम	रा–	ठा
P	PP	-P	PP	P	PM	PM	P
JA	BAS	-DH	GU	RA	TA	RA-	T
	IN	U	JA		MA		HA

म	मम	म	मग	रेम	ग	–	–
द्रा	विड़	उत	कल	बं–	ग	–	–
M	MM	M	MG	RM	G	–	–
DRA	VI	UT	KA	BAN-	GA	–	–
	DA		LA				

ग	गग	ग	गरे	पप	पम	म	म
विं	ध्यहि	मा	चल	यमु	ना–	गं	गा
G	GG	G	GR	PP	PM	M	M
VIN	DHY	MA	CHA	YA	NA	GA	GA
	AHI		LA	MU		N	

ग	गग	रेरे	रेरे	नीरे	स	–	–
उ	च्छल	जल	धित	रं–	ग	–	–
G	GG	RR	RR	NR	S	–	–
U	CHCH	JA	DHI	RAN	GA	–	–
	ALA	LA	TA				

ग	गग	ग	ग	रेग	म	–	–
तव	शुभ	ना	मे	जा–	गे–	–	–
G	GG	G	G	RG	M	–	–
TA	SUB	NA	ME	JA-	GE	–	–
VA	HA						

गमु	पप	प	मग	रेम	ग	–	–
तव	शुभ	आ	शिष	मा–	गे	–	–
GM	PP	P	MG	RM	G	–	–
TA	SU	A	SI	MA-	GE	–	–
VA	BHA		SA				

ग	गग	रेरे	रेरे	नीरे	स	–	–
गा	हे	तव	जय	गा–	था	–	–
G	GG	RR	RR	NR	S	–	–
GA	HE	TA	JA	GA	TH	–	–
		VA	YA		A-		

पप	पप	प	पम	प	पप	मधु	प
जन	गण	मं	गल	दा	यक	जय	हे
PP	PP	P	PM	P	PP	MD	P
JA	GA	MA	GA	DA	YA	JA	HE
NA	NA	N	LA		KA	YA	

म	मम	ग	गग	रेम	ग	–	नीनी
भा	रत	भा	ग्यवि	धा–	ता	–	जय
M	MM	G	GG	RM	G	–	NN
BHA	RA	BHA	GYA	DHA-	TA	–	JA
	TA		VI				YA

सं	–	-O	नीध	नी	–	-O	पप
हे	–	-O	जय	हे–	–	-O	जय
S	–	-O	ND	N	–	-O	PP
HE	–	-O	JAYA	HE	–	-O	JAYA

ध	–	–	O	सस	रेरे	गग	रेग
हे	–	–	O	जय	जय	जय	जय
D	–	–	O	SS	RR	GG	RG
HE	–	–	O	JA	JA	JA	JA
				YA	YA	YA	YA

म	–	–	–
हे	–	–	–
M	–	–	–
HE	–	–	–

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

'जनगणमन' राष्ट्र गान कैसे बना, और इसका प्रयोग कब किया जाता है?

राष्ट्रगान 'जनगणमन' पर आधारित एक कविता अपने शब्दों में लिखिए।

हमारे देश के नेताओं द्वारा राष्ट्रगान के बारे में, जो उद्धरण तथा बयान दिए गए हैं, उन्हें इकट्ठा कीजिए।

भारत के पड़ोसी देशों के राष्ट्रगानों को इकट्ठा कीजिए। यह भी पता लगाइए कि ये गान उन देशों के राष्ट्रगान कैसे बने?

अपने देश की विविध प्रांतीय भाषाओं में 'जनगणमन' के अनुवाद इकट्ठा कीजिए।

अपने विद्यालय में प्रदर्शित करने के लिए रवीन्द्रनाथ ठाकुर के जीवनवृत्त और कार्यो पर आधारित दीवार–पत्रिका सृजित कीजिए।

Creative Activities for Students and Teachers

How did the song 'Jana gana mana' become the national anthem and when is it played?

Write a poem in your own words based on national anthem 'Jana gana mana.'

Collect the quotes and statements about national anthem made by leaders of our country.

Collect the national anthem of neighboring countries of India. Also find out how these songs became national anthems of those countries.

Collect the translations of 'Jana gana mana' in various regional languages of our country.

Develop a wall magazine on the life history and works of Rabindranath Tagore to display in your school.

About CCRT

The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) has been set up in the service of education specialising in the area of linking education with culture. In its academic programmes it has conducted researches in the study of methodologies for providing a cultural input in curriculum teaching. The CCRT organizes a variety of training programmes for administrators, teacher educators, in service teachers of all levels and students. These aim at sensitizing the participants to the aesthetic and cultural norms governing all creative expressions. Educational visits to historical sites and museums encourage participants to use these as extended centres of learning. The major focus of the training, however, is on project work and preparation of action plans for integrating various educational disciplines using a cultural base. The training also provides an opportunity to acquire skills in traditional arts and crafts so that this knowledge may be used to discover the creative potential of the students.

To supplement the training, the CCRT collects resources in the form of sound recordings, slides and photographs, films and other audio-visual materials on the arts and crafts. These are then used to produce teaching materials for creating an understanding and appreciation of the diversity and continuity of the Indian cultural traditions.

The CCRT's audio-visual and printed material on the arts and crafts of India are being widely used for cultural education. Though some of these materials focus on a specific art form, they are also used to enrich teaching of different disciplines of the curriculum. The publications include sets of illustrated material with suggested activities for students and teachers. The digital slide-album of performing arts, natural environment and plastic/visual arts containing images alongwith descriptions cover a wide range of cultural manifestations. The films on the traditional performing arts and on historical and cultural sites are informative and aesthetically produced.

Since 1982, the CCRT is implementing the Cultural Talent Search Scholarship Scheme and is giving scholarships to talented school going children in the age group of 10-14 years to study the traditional arts and crafts of their regions.

The CCRT has been awarded for implementation the Scheme namely "Award of Scholarships to Young Artistes in different Cultural fields", under which 400 scholarships are provided in the age group 18-25 years in the field of Indian Classical Music, Classical Dances, Light Classical Music, Theatre, Visual Arts and Folk, Traditional and Indigenous Arts.

The CCRT has also been awarded for implementation the Fellowship Scheme namely "Award of Fellowship to outstanding persons in the Field of Culture", under which 200 Junior and Senior Fellows each are selected every year. The focus is on "in-depth study/research" in various facets of culture. These include New Emerging Areas of Cultural Studies.

The CCRT has instituted a few awards for trained teachers who are doing commendable work in the field of education and culture.

For further details you may visit our website: www.ccrtindia.gov.in

References

Constituent Assembly (Legislative) Debates, Vol. I.,(August 25, 1948)

Madras Mail, (November 3, 1937)

National Flag Code

National Songs, (1963), Publications Division.

Our National Insignia, (1954), Amalapuram.

Sen, Prabodh Chandra, (1972), " India's National Anthem", Kolkata.

The Nation, (December 3, 1948 and March 10, 1949).

Zaidi, A.M., (1979) "The Encyclopaedia of Indian National Congress", New Delhi.

Photo Credits

Press Information Bureau, New Delhi

This package contains booklets on the following National Symbols

National Emblem	National Flower
National Flag	National Bird
National Anthem	National Animal
National Song	National Calendar

पुनश्च : ''भारत के राष्ट्रगान से संबंधित आदेश'' (माननीय उच्चतम न्यायालय का आदेश, दिनांक 14.02.2017 तथा 30.11.2016) एवम् ''भारत के राष्ट्रगान से संबंधित आदेशों का कड़ाई से अनुपालन करने के संबंध में परामर्श'' में उद्धृत विस्तृत मार्गदर्शिकाओं के लिए कृपया गृह मंत्रालय, भारत सरकार की वेबसाइट : www.mha.nic.in का संदर्भ ग्रहण करें।

P.S. Kindly refer to the website of Ministry of Home Affairs/*Grih Mantralaya* i.e. www.mha.nic.in for detailed guidelines mentioned in the "Orders relating to the National Anthem of India" (Hon'ble Supreme Court's Order dated 18.04.2017 and 30.11.2016) and also the "Advisory related to Strict compliance of the Orders relating to the National Anthem of India".

First Edition 1998
Reprint Edition 2017
Published by Director
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector-7, Dwarka
New Delhi (India)

© Centre for Cultural Resources and Training 2017

ALL RIGHTS RESERVED

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training

Printed at India Offset Press, Delhi-110064